REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

"हरिशंकर परसाई के रचना में भ्रष्टाचार पर मार्मिक व्यंग्य : भोलाराम का जीव"

डॉ. कृष्ण बिहारी रॉय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी , शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

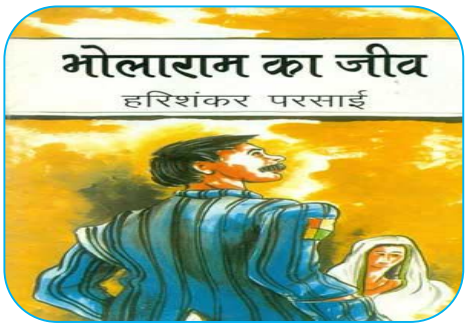

भ्रष्टाचार की जड़ें समूचे देश में फैली हुई हैं। सर्वत्र दबाव, धन, पहुँच का बोलबाला है। ऐसे में कोई सामान्य व्यक्ति अपनी परेसानियाँ कैसे सुलझाये। आजादी से पूर्व अंग्रेजी अफसरों के अत्याचार, शोषण, प्रताड़ना से त्रस्त आम जनता ने आजादी के बाद चैन की साँस लेने की कल्पना की मगर, अब सरकारी अफसर ही वह भूमिका अदा करने लगे। भोलाराम का जीव कहानी सरकारी पदों पर जमें बदमाश, घूँसखोर, अधिकारियों की कारगुजारियों का पर्दाफाश किया है कि वे किस तरह अपने व्यक्तिगत लाभ हेतु एक गरीब व्यक्ति को उसकी आजीविका की एक मात्र आधार पेंशन से अपने व्यक्तिगत लाभ बावत बंचित रखते हैं।

मुख्य शब्द – हरिशंकर परसाई, शोषण, प्रताड़ना, भोलाराम का जीव एवं भ्रष्टाचार ।

प्रस्तावना –

स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दुस्तान में लघु कथात्मक व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से जीवन के उलझे हुये प्रसंगों को जिस बारीकियों से परसाई ने उकेरा है वह अद्वितीय है, उनके सारगर्मित लेखन की कोई मिसाल नहीं मिलती है। परसाई के व्यंग्यों ने युगान्तकारी परिवर्तन की आधार शिला रखी। मानव की न्यूनताओं उसकी कमजोरियों के शाब्दिक रेखा चिन्न उन्होंने व्यंजना के साथ प्रस्तुत किये। देश की आजादी से पूर्व की स्थिति का यदि आँकलन करना हो तो उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द को पढ़िये एवं यदि स्वातन्त्रोत्तर हिन्दुस्तान देखना हो तो हमें हरिशंकर परसाई को पढ़ना चाहिए। स्वातन्त्रोत्तर भारत के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पतन की पूरी झाँकी परसाई के व्यंग्यों में मिलती है। चारित्रिक गिरावट, आडम्बर एवं विसंगतियों का पर्दाफाश करते हुए उनके व्यंग्य जनमानस को उद्वेलित करते हैं। स्वतन्त्रता के उपरान्त हमारे सारे मानव मूल्यों का ह्रास हुआ है।

विश्लेषण –

पौराणिक पात्रों को आधार बना, वर्तमान में शासकीय विभागों में व्याप्त विसंगतियों का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख दिया है। यमराज के पास प्रस्थान करते हैं, तभी रास्ते में भोलाराम का जीव कहीं गायब हो जाता है, यमदूत परेशान हो जाते हैं। वे सारा ब्रम्हाण्ड छान मारते हैं अगर भोला का जीव उन्हें नहीं मिलता, अन्ततः वे वापस यमराज महाराज के पास पहुँचते हैं, वहाँ से यमराज जी नारद जी को पृथ्वी पर भोलाराम के जीव का पता करने भेजते हैं। नारद जी भोलाराम की पत्नी से मिलते हैं। भूखे बच्चे, परेशान पटेहाल भोलाराम की पत्नी को देख नारद जी उसकी हालत पर दयाकर भोलाराम की रुकी हुई पेंशन निकलवाने सरकारी दफ्तर

जाते हैं। वहाँ वे पेंशन के विषय में पूछताछ करते हैं, वहाँ सरकारी मामले में बैठकर घूँसखोर बाबू आगन्तुकों से अपने ही ढंग से घूँस की माँग करते हैं।

वहाँ से चलकर नारद जी सीधे सरकारी दफ्तर पहुँचे, वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से भोलाराम के केस के बारे में बातचीत की उस बाबू ने उन्हें ध्यान पूर्वक देखा और बोला– भोलाराम जी ने दरख्वास्त तो भेजी थी, पर उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिये कहीं उड़ गयी होगी।''[1] नारद जी ने कहा भई ये बहुत से पेपर वेट तो रखे हैं, इन्हें क्यों नहीं रख दिया ?

बाबू हँसा – आप साधु हैं आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती दरख्वास्ते पेपर वेट से नहीं दबती।

सरकारी दफ्तरों में बिना घूँस लिये कोई भी काम नहीं होता। बाबुओं द्वारा माँगी गयी अपेक्षित राशि आदि आप नहीं उपलब्ध करा सकते तो फिर चाहे आप नियमानुसार सही कार्य ही क्यों न कराना चाहते हो आपके कागजों में कोई न कोई कमी निकाल कर निरन्तर आपको प्रताड़ित किया जाता रहेगा और फिर आप कार्यालय के पचीसों चक्कर लगा चुकेंगे, फिर पूछेंगे अब मैं क्या करूं तो वहाँ कार्यालय में वर्षों से जमा चपरासी ही आपको समझा देगा कि बाबुओं को, साहबों को घूँस देवे तभी काम होगा। वे एक ना समझ आदमी को भी घूँस देने का तरीका बता देंगे। सरकारी आफिसों के इस भ्रमजाल में जब स्वर्ग लोक से आये नारद जी फँसे तो लम्बे चक्कर काटने के बाद ही उन्हें समझ आया कि काम ऐसे नहीं चलेगा। परसाई जी ने बड़े ही सटीक तरीके से व्यंग्य किया है –

नारद उस बाबू के पास गये, उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पांचवे के पास, जब नारद पचीस तीस बाबुओं, अफसरों के पास घूम आये तब एक चपरासी ने कहा – ''महाराज आप क्यों इस झन्झट में पड़ गये आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहे तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिये, उन्हें खुश कर लिया तो सभी काम हो जायेगा।''[2]

भोले भाले नारद सारे दिन यहाँ–वहाँ चक्कर ही लगाते रहे, कोई भी काम नहीं हुआ। आम आदमी अपनी रोजी–रोटी की समस्याओं से जूझता बुरी तरह परेशान रहता है, परन्तु सरकारी दफ्तरों में पदस्थ बाबुओं को इससे भला क्या सरोकार। वे तो बस अपना उल्लू सीधा करना जानते हैं, उन्हें तो बस पैसा चाहिये। परसाई ने एक कड़वी सच्चाई को हमारे सामने रखा है। परसाई की अधिकांश रचनाएँ ऐसे ही तत्वों का भण्डाफोड़ करती हैं।

परसाई की रचनाओं के विषय में भगवान सिंह ने लिखा है कि – ''परसाई की अधिकांश रचनाओं में एक खुला प्रहार है। यथा स्थिति पर व्यवस्था पर, प्राचीन रूढ़ियों पर, संस्कारों पर और प्रायः सभी रचनाओं में बदलते मूल्यों और क्रान्तिकारी शक्तियों और सम्भावनाओं के प्रति गहरा सम्मान भाव है। उपेक्षित और शोषित वर्गों के प्रति सहानुभूति है और ढोंग का उद्घाटन है।''[3]

परसाई ने सावधानी से असंगत परिस्थितियों पर कलम चलाई। प्रचलित भाषा का प्रयोग किया। जिजिविषा की हिमायत करने वाले उनके व्यंग्य मानव मन पर बड़ा असर डालते हैं। चपरासी, बाबू एवं साहब सभी द्वारा अब नारद जी को इशारे से भोलाराम की फाइल पर वजन रखने को कहा जाता है पर जब नारद नहीं समझते तो बड़े साहब उसे वजन रखने का तात्पर्य बतलाते हैं। चपरासी से लेकर बड़े साहब तक सभी आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हुये हैं, कौन सुने। बड़े साहब तो सामने वाले के पास जो कुछ है बस वही या लेने के इच्छुक है। नैतिक पतन का एक स्वरूप देखें – ''साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं, जैसे आपकी यह सुन्दर–सुन्दर वीणा है इसका भी–वजन भोलाराम की दरखास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है, यह मैं उसे दे दूंगा।''[4]

सरकारी महकमों में पदस्थ जिम्मेदार अधिकारी तक सिर्फ लूट खसोट में लगे रहते हैं, उन्हें अपनी कर्तव्य निष्ठता, वैयक्तिक जिम्मेदारियों के पूरा करने से कोई मतलब नहीं है। भोलाराम रिटायर होने के पश्चात् अपनी आजीविका की एक मात्र किरण अपनी पेंशन के निकालने वाले के लिये सैकड़ों अर्जी लगाता है। उसकी

[1] भोलाराम का जीव–परसाई रचनावली 1983, पृष्ठ 171, हरिशंकर परसाई.
[2] भोलाराम का जीव–परसाई रचनावली, पृष्ठ 171, भाग–1.
[3] सर्वनाम, दिसम्बर, 1969, पृष्ठ 20, भगवान सिंह.
[4] भोलाराम का जीव, पृष्ठ 172, परसाई रचनावली भाग–1, 1983, हरिशंकर परसाई.

भाग दौड़ करते –करते वह थक जाता है, पूर्ण रूप से टूट जाता है। हार जाता है। परिवार भूखों मरने लगता है, धीरे–धीरे सोना, चाँदी, जेवर, बर्तन सब बिक जाते हैं। वह निराशा के गहन अंधकार में डूबने उतराते अपने पेंशन प्रकरण के एक हो जाने की तमन्ना लिये अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। यमदूत जब भोलाराम के जीव को लेकर स्वर्ग लोक के लिये प्रस्थान करते हैं तो वह रास्ते में ही कहीं गुम हो जाता है। यमदूत सारा ब्रम्हाण्ड छान मारते हैं, फिर भी उन्हें भोलाराम का जीव नहीं मिलता। यमराज महाराज नारद जी को पृथ्वी पर भेजते हैं। तब वहाँ भोलाराम का जीव उसकी पेंशन की फाइलों में अटका हुआ मिलता है।

परसाई ने यहाँ बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यंग्य किया है, यदा – साहब ने हुक्म दिया– बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ, थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ, डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल पर नाम देखा और निश्चित करने के लिये पूछा क्या नाम बताया, साधु जी आपने। नारद समझे कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है, इसलिये जोर से बोले– ''भोलाराम'' साहसा फाइल में से आवाज आयी कौन पुकार रहा है मुझे – पोस्ट मैन है क्या, पेंशन का आर्डर आ गया।''[5]

एक गरीब आदमी जो शासकीय नौकरी से रिटायर हो चुका हो सर्वत्र छाये भ्रष्टाचार के कारण हमेशा परेशान रहता है, उसके आय के स्त्रोत काफी कम होते हैं, वह चाहता है कि रिटायर होने के बाद न जाने कब उसकी मृत्यु हो जाये, उसे अपने परिवार के भविष्य की फिक्र रहती है। वह चाहता है कि उसके न रहने पर भी परिवार का जीवन–यापन क्रम चलता रहे। परसाई ने भोलाराम के बहाने सारे तमाम नौकरी पेशा मध्यम वर्गीयों की स्थिति का खुलासा किया है। पौराणिक क्या को आधार बनाकर लिखा। उनका यह व्यंग्य अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है। भोलाराम किसी रोग से ग्रसित नहीं हुआ था, अपितु वह गरीबी की बीमारी के कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ था। नारद जी के रामलोक चलने के आग्रह पर भोलाराम के जीव का यह कहना कि मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता। मैं प्रबंध वक्रता के सफल निदर्शन दिखलाई पड़ते हैं अधिकारियों की चारित्रिक भ्रष्टता, उनकी मृत होती संवेदना क्षमता रिश्वत खोरी आदि का वक्रोक्तियों द्वारा पर्दाफाश किया गया है।

निष्कर्ष –

उपर्युक्त अध्ययन के फलस्वरूप मैं यह कहना उचित समझता हूँ कि फतांसी और यथार्थ के परसाई ने बहुत से प्रयोग किये हैं। भोलाराम के जीव के पौराणिक पात्र नारद के द्वारा एकदम नये ढंग से अपनी बात रखी है। समाज की संरचनात्मक विद्रुपताओं को कहानी का प्रमुख घटक बनाया है। कहानी के मुख्य उद्देश्य के साथ–साथ परसाई दूसरी भी कुछ चुभती हुई बांते भी बखूबी कहते चलते हैं। धर्मराज से चित्रगुप्त भोलाराम के जीव के विषय में जब बात करते रहते हैं तभी चित्रगुप्त कहते हैं "महाराज आज कल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है, लोग दोस्तों को कुछ चीज भेजते है और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्तें में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है, राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद दुर्गति करने के लिये नहीं नहीं उड़ा दिया"। कहानी की मुख्य धारा के साथ ही द्वितीय बातों पर भी वे व्यंग्य करते चलते हैं। इससे कहानी के प्रवाह में कोई बाधा नहीं आती, वरन् एक रचना में एक नयी बात होने से रोचकता और भी बढ़ जाती है। परसाई विवेक और तर्को के आधार पर समाज में फैली विसंगतियों को सामने लाकर मनुष्यों की परेशानियों के कारणों का पता लगाते है। विद्रोह के कारणों की शिनाख्त कर शोषण की दुर्व्यव्यवस्था को मिटाने को कृत संकल्पित नजर आते हैं। मनुष्य, संस्कृति एवं सत्य की रक्षा के लिये सरल शैली में लिखी परसाई की यह लघु कथा अत्यंत उद्वेलित करती ळें मानव कल्याण तभी सम्भव है, जब इस राष्ट्र का चरित्र महान हो।

[5] भोलाराम का जीव, पृष्ठ 172, परसाई रचनावली भाग–1, 1983, हरिशंकर परसाई.

संदर्भ –

1. भोलाराम का जीव, पृष्ठ 172, परसाई रचनावली भाग–1, 1983, हरिशंकर परसाई ।
2. सर्वनाम, दिसम्बर, 1969, पृष्ठ 20, भगवान सिंह.
3. भोलाराम का जीव– पृष्ठ 171, परसाई रचनावली 1983, हरिशंकर परसाई.
4. भोलाराम का जीव–परसाई रचनावली, पृष्ठ 171, भाग–1.

डॉ. कृष्ण बिहारी रॉय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी , शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)